



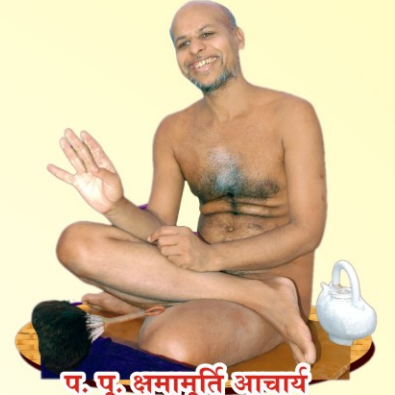
श्री पार्श्वनाथ भगवान

ॐ नमः सिद्धेभ्यः - 3

लघु प्रतिक्रमण

णमो अरहंताण, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

मंगलमय मंगल विशद, हैं नव देव महान।
प्रतिक्रमण सब दोष का, करते यहाँ प्रधान॥



प. पू. क्षमामूर्ति आचार्य
श्री 108 विशद सागर जी महाराज

हे प्रभु! हे जिनेन्द्र देव! हे परम पिता! हे परमात्मा मेरे द्वारा वर्तमान पर्याय में या जन्म जन्मान्तरों में 84 लाख योनियों में घूमते हुए नित्य निगोद सात लाख, इतर निगोद सात लाख, पृथ्वीकाय सात लाख, जल काय सात लाख, अग्निकाय सात लाख, वायुकाय सात लाख, वनस्पतिकाय दस लाख, दो इन्द्रिय दो लाख, तीन इन्द्रिय दो लाख, चार इन्द्रिय दो लाख, नरकगति चार लाख, तिर्यच गति चार लाख, देवगति चार लाख, मनुष्यगति चौदह लाख इस प्रकार चौरासी लाख माता पक्ष में, पिता पक्ष में एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़, सूक्ष्म-बादर, पर्याप्त- अपर्याप्त के भेद से किसी भी जीव की मेरे द्वारा विराधना हुई हों, कष्ट हुआ हो दिल को ठेस पहुँची हो, मेरे द्वारा संताप को प्राप्त हुए हो। मेरे द्वारा विराधित एवं दुखित वे जीव वर्तमान पर्याय में जहाँ कहीं भी हों मुझ अपराधी को क्षमा करें।

अज्ञान दशा में एवं प्रमादपूर्वक लगे हुए समस्त दोषों का परिमार्जन करते हुए मैं देव-शास्त्र-गुरु की साक्षी पूर्वक पूर्वकृत किये सभी अपराधों को स्वीकार कर पापों का प्रायश्चित्त स्वीकार करता हूँ।

कृत-कारित-अनुमोदना से किये गये अशुभ कार्य से अर्जित मेरे सभी पाप मिथ्या हों "तस्य मिच्छा में दुक्कडं" (कायोत्सर्ग करें)

प्रातः कालीन वन्दना

दोहा- पावन हैं नव देवता, मंगलमयी महान।
करते वन्दन प्रातः हम, जिनके चरण प्रणाम।।

1. पूरव दक्षिण पश्चिम उत्तर दिशाओं एवं विदिशाओं में विराजमान श्री अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिन धर्म, जिन आगम, जिन चैत्य, जिन चैत्यालय को मेरा नवकोटि से नमस्कार हो-3॥

2. वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत काल सम्बन्धी तीस चौबीसी के सात सौ बीस तीर्थकर भगवन्तों को मेरा अत्यन्त भक्ति भाव से नमस्कार हो- 3 ॥
3. एक सौ साठ विदेह क्षेत्रों में विद्यमान विंशति तीर्थकर साक्षात् विराजमान रहते हैं। हम यहीं भरत क्षेत्र से विदेह क्षेत्र के समवशरण में साक्षात् विराजित उन तीर्थकर भगवन्तों को नमन करते हैं- 3 ॥
4. तीन लोक के अग्र भाग आठवी ईषत्प्राग्भार भूमि पर अर्धचन्द्राकार सिद्ध शिला पर अनन्तान्त सिद्ध परमेष्ठी अपने शुद्ध स्वरूप में लीन हैं उन अनन्तान्त सिद्ध परमेष्ठी भगवन्तों के श्री चरणों में मेरा त्रियोग से नमस्कार हो- 3 ॥
5. तीनों लोकों में चतुर्णिकाय के समस्त देवों एवं मनुष्यों से पूज्य जिनेन्द्र देव के अधोलोक संबंधी सात करोड़ बहत्तर लाख, मध्य लोक संबंधी चार सौ अट्ठावन, ऊर्ध्व लोक संबंधी चौरासी लाख सत्तानवे हजार तेईस अकृत्रिम चैत्यालयों को एवं उनमें विराजित नौ सौ पच्चीस करोड़ त्रेपन लाख सत्ताईस हजार नौ सौ अड़तालिस अकृत्रिम जिनबिम्बों को मेरा नमस्कार हो- 3 ॥
6. ज्योतिष एवं व्यन्तर देव के विमानों में स्थित असंख्यात रत्नमयी अकृत्रिम जिनालयों को एवं उनमें विराजित जिनबिम्बों को अत्यन्त भक्ति भाव से नमस्कार हो- 3 ॥
7. भावश्रुत और अर्थ पदों के कर्त्ता श्री तीर्थकर देव द्वारा भाषित एवं तीर्थकर देव के निमित्त से अनन्तर भावश्रुत रूप पर्याय से परिणित श्री इन्द्रभूति गौतम गणधर ने ग्यारह अंग और चौदह पूर्व रूप ग्रन्थों की एक ही मुहूर्त में क्रमशः द्रव्यश्रुत की रचना की है उनको मैं भक्ति भावपूर्वक नमस्कार करता हूँ।
8. दोनों हाथों की अंगुलियों के 24 पोरों में 24 तीर्थकरों का स्मरण कर क्रम-क्रम से नमस्कार करते हैं- 3 ॥
9. मध्य लोक में मनुष्यों द्वारा बनाए गए कृत्रिम जिनालयों को एवं उनमें विराजमान कृत्रिम जिनबिम्बों को अत्यन्त श्रद्धा भक्ति से नमस्कार करते हैं।
10. मध्यलोक में स्थित शाश्वत तीर्थकर जन्म भूमि एवं निर्वाण भूमियों को एवं वहाँ से निर्वाण प्राप्त जिनों को मेरा बारम्बार नमस्कार हो- 3 ॥
11. हे भगवन्! प्रातः काल की पावन बेला में भावना भाते हैं संसार में जितने भी रत्नत्रयधारी आचार्य, उपाध्याय, साधु हैं सभी के रत्नत्रय की पूर्णता हो और जो रत्नत्रय धारण करना चाहते हैं उनको रत्नत्रय की प्राप्ति हो जाय तथा शेष जितने जीव हैं उन सबके योग्यतानुसार क्रम से रत्नत्रय धारण करने के भाव हो जाएँ।
12. हे भगवन्! आपकी असीम कृपा प्राणी मात्र को प्राप्त हो। प्राणी मात्र का कल्याण हो। सभी जीव सुखी रहें, स्वस्थ रहें। सभी को समय-समय पर उपयुक्त आहार-आवास एवं वस्त्रों की जरूरत के अनुसार उपलब्धि हो।
13. हे प्रभु! सच्चे धर्म की आराधना करने वाले सभी त्यागी-व्रतियों का आहार निरन्तराय सानन्द सपन्न हो। उन पर कोई उपसर्ग न आए।
14. हे भगवन्! मेरे हृदय में अरिहंत-सिद्धों की, दिगम्बर सन्तों की भक्ति निरन्तर बनी रहे। मरण समय आत्मा-परमात्मा का स्मरण करते-करते ही संयम से समाधिपूर्वक प्राणों का विसर्जन हो।

15. हे प्रभू! मेरे द्वारा किये गये धर्म का उद्देश्य धन सम्पदा या लौकिक स्वार्थ न हो। निस्वार्थ भाव से सेवा कर सकूँ।
16. अढ़ाई द्वीप के दो समुद्र सम्बन्धी पन्द्रह कर्मभूमि क्षेत्र में रहने वाले तीर्थंकरों को जिनेश्वरों को, केवलियों को, गणधरों को चौंसठ ऋद्धिधारी मुनीश्वरों को, धर्माचार्यों को, धर्म के नायकों को द्वादशांग रूप अमृत का पान कराने वाले ऋषीश्वरों को ऐसे अढ़ाई द्वीप के सब मिलाकर तीन कम नौ करोड़ ऋषीश्वरों को एवं चतुर्विध संघ को मैं भाव-भक्ति से नमस्कार करता हूँ।
17. हे प्रभु! जो हमारा वर्तमान है वह आपका अतीत था और जो आपका वर्तमान है वह हमारा भविष्य बने यही मंगल भावना भाते हैं।
18. हे सिद्ध परमेष्ठी भगवन्! आप वर्तमान में अशरीरी अवस्था में शरीर से रहित सर्व संकल्प विकल्पों से रहित सिद्ध अवस्था में लोक के अग्रभाग सिद्धालय में विराजमान हो। हम भी सर्वोत्कृष्ट साधना कर सर्व कर्मों से रहित होकर अपने स्थायी निवास सिद्धालय में पहुँचें। शरीर रूपी किराये के घर बदलते-बदलते परेशान हो चुके हैं।

“मर्यादा”

19. हे भगवन्! दशो दिशाओं में जितनी दूरी तक मेरा आवागमन होगा उसकी छूट शेष दूरी का त्याग।
20. दश लाख वनस्पति में अधिकतम सौ वनस्पति की उपयोगिता की दृष्टि से छूट शेष का त्याग रहेगा।
21. दश प्रकार के बहिरंग परिग्रह में जितना परिग्रह मेरे नाम से रजिस्टर्ड है मेरे अधिकार में है उसकी छूट शेष का त्याग रहेगा।
22. खाद्य-स्वाद्य-पेय-लेय चारों प्रकार के आहार में से जो भी आहार मैंने जितने समय लिया उसके पश्चात् जब तक पुनः मैं वह आहार ग्रहण न करूँ तब तक के लिए उस आहार का त्याग रहेगा।
23. मेरे शरीर पर वस्त्र आभूषण आदि का जितना भी परिग्रह है उसके अतिरिक्त शेष परिग्रह को तब तक मैं पुनः ग्रहण न करूँ तब तक के लिए त्याग रहेगा।
24. हे भगवन्! जब तक मोक्ष की प्राप्ति न हो तब तक आपके चरण मेरे हृदय में मेरा हृदय आपके चरणों में लीन रहे।

श्लोक: “गुरुभक्त्यावयं सार्धं, द्वीपद्वितयवर्तिनः।
वन्दामहे त्रिसंख्योन, नव कोटि मुनीश्वरान॥”

25. ढाई द्वीप स्थित तीन कम नव करोड़ मुनियों के लिए मेरा “विशद” भक्तिभाव पूर्वक नमस्कार हो-2
णिच्चकालं, अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओं, बोहिलाओ, सुगई-गमणं
समाहिमरणं, जिन गुण, संपत्ति होउ मज्झं। (कायोत्सर्ग करें)

“घुटनों के बल चलते चलते, पैर खड़े हो जाते हैं।
छोटे-छोटे नियम एक दिन, सुभ महाव्रत बन जाते हैं॥”

मंगल भावना

सबका मंगल सबका मंगल सबका मंगल होय। प्राणी है जितने धरती पर, दुखी रहे ना कोय॥

सबका मंगल सबका मंगल, सबका मंगल होय॥टेक॥

जग में कोई दुख ना पावे, सुखमय हो संसार। रोग शोक दुख नाश दारिद्र हो, घर-घर मंगलाचार॥

सुखी रहे नर-नार, सबका मंगल होय। सबका मंगल सबका मंगल, सबका मंगल होय॥1॥

दृश्यादृश्य सभी जीवों में, हो समता का भाव। पाप नाशकर पुण्योदय हो, जागे निज स्वभाव॥

पार हो भव से नाव, सब का मंगल होय। सबका मंगल सबका मंगल, सबका मंगल होय॥2॥

जल थल नभ चर जो हैं प्राणी, हो सबका कल्याण। बन्धन छूटे जन्म मरण का, पावें पद निर्वाण॥

पाएँ सम्यक् ज्ञान, सबका मंगल होय। सबका मंगल सबका मंगल, सबका मंगल होय॥3॥

महिमा सुनकर प्रभू आपकी, आये आपके द्वार। यह संसार दुखों का सागर, आप हो तारण हार॥

करते भव से पार, सबका मंगल होय। सबका मंगल सबका मंगल, सबका मंगल होय॥4॥

हाथ जोड़कर विनती करते, हे प्रभु! कृपा निधान। भक्त 'विशद' ये खड़े द्वार पे, करो शीघ्र कल्याण॥

हे प्रभु कृपा निधान, सबका मंगल होय। सबका मंगल सबका मंगल, सबका मंगल होय॥5॥

दोहा-मंगलकारी लोक में, मंगलमय भगवान। मंगल कीजे भक्त का, हे प्रभु कृपा निधान॥

विशद चिन्तन

करो निज का विशद चिन्तन, अगर सुख से रहा चाहें। घटाओं मन की आशाएँ, अगर अपना भला चाहें॥टेक॥

आग में डालते ईंधन, ज्योति ऊँची सदा होवें। बढ़ामत लोभ रे प्राणी, अगर सुख से रहा चाहें॥1॥

दया करुणा अहिंसा को, हृदय का हार तुम जानो। सत्य हितकर वचन बोलें, सुहित अपना अगर चाहें॥2॥

वही धनवान हैं जग में, चौर्य के जो रहे त्यागी। वो कायर दीन होते हैं, जो पर नारी हरा चाहें॥3॥

दुखी रहते हैं निश दिन वे, जो आरत ध्यान करते हैं। तजें लालच जो आजादी से, रहने का मजा चाहें॥4॥

बिना माँगे मिले मोती, भीख माँगे नहीं मिलती। रमण कर चेतना में जो, विशद शांति अहा चाहें॥5॥

दोहा - ध्यान करें प्रभु का विशद, मन में धर संतोष।

जीवन उनका शीघ्र ही, हो जाए निर्दोष॥

:: पुण्यार्जक ::

श्री चन्द्रप्रकाश जैन

अशोक नगर, मण्डोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-110093